Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

विकसित भारत की संकल्पना: युवाओं की भूमिका के संदर्भ में

[1]डॉ. साक्षी मेहता, [2]आराधना अवस्थी

[1]सहायक आचार्य, मानविकी और कला विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

[2]शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सार

भारत आज 21वीं सदी में तीव्र गति से प्रगति की ओर अग्रसर है। "विकसित भारत 2047" का लक्ष्य न केवल आर्थिक विकास बल्कि सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन, तकनीकी नवाचार, सांस्कृतिक धरोहर और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस संदर्भ में युवा शक्ति की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भारत विश्व के उन देशों में है जहाँ सबसे बड़ी युवा जनसंख्या विद्यमान है। यह शोध-पत्र विकसित भारत की संकल्पना, उसके ऐतिहासिक व समकालीन आयामों तथा युवाओं की विविध भूमिकाओं का विश्लेषण करता है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा, कौशल, नवाचार, उद्यमिता, लोकतंत्र में भागीदारी और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में युवाओं का योगदान ही विकसित भारत की आधारशिला सिद्ध होगा।

मुख्य शब्द

विकसित भारत, युवा शक्ति, उद्यमिता, नवाचार, शिक्षा नीति, अमृतकाल 2047, सामाजिक परिवर्तन, सतत विकास।

(1) प्रस्तावना

भारत एक प्राचीन सभ्यता और आधुनिक राष्ट्र दोनों का अद्वितीय संगम है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत निरंतर विकास की दिशा में आगे बढ़ता रहा है। आज़ादी के 100 वर्ष पूरे होने तक, अर्थात वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यह केवल एक नारा या राजनीतिक दृष्टि नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का स्वप्न और उत्तरदायित्व है।

भारत की कुल जनसंख्या में 65 प्रतिशत से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु वर्ग के हैं। इसे 'डेमोग्राफिक डिविडेंड' कहा जाता है, जो कि भारत को वैश्विक स्तर पर अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। किंतु यदि इस युवा शक्ति का सही दिशा में उपयोग न हो पाए तो यही वरदान अभिशाप भी बन सकता है।

इस शोध-पत्र में विकसित भारत की संकल्पना की रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी तथा यह विश्लेषण किया जाएगा कि किस प्रकार युवा सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना सक्रिय योगदान देकर विकसित भारत के स्वप्न को साकार कर सकते हैं।

(2) विकसित भारत की संकल्पना: ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

1. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत का इतिहास गौरवशाली रहा है। प्राचीन काल में भारत ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, कला और व्यापार का प्रमुख केंद्र रहा। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय विश्वभर से विद्यार्थियों को आकर्षित करते थे। गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, योग और दर्शन की परंपराएँ भारत की धरोहर रही हैं। मध्यकालीन काल में विदेशी आक्रमणों और उपनिवेशवाद ने भारत की उन्नति को बाधित किया। ब्रिटिश शासन ने भारत की आर्थिक और सामाजिक संरचना को कमजोर किया, जिससे गरीबी, अशिक्षा और पिछड़ापन बढ़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के पश्चात् भारत ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से योजनाबद्ध विकास की नींव रखी। उद्योग, कृषि, विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान, शिक्षा और लोकतंत्र की मजबूती के प्रयास हुए। किंतु गरीबी, अशिक्षा, असमानता और बेरोजगारी जैसी चुनौतियाँ बनी रहीं। अब अमृतकाल (2022–2047) के दौरान भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

2. सामाजिक परिप्रेक्ष्य

विकसित भारत की संकल्पना केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और समावेशी विकास पर भी आधारित है। भारत की विविधता – भाषा, धर्म, संस्कृति, जाति और लिंग – उसकी शक्ति है, किंतु यही विविधता कभी-कभी विभाजन का कारण भी बन जाती है। विकसित भारत में सभी वर्गों को समान अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता और सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराना अनिवार्य है।

- **नारी सशक्तिकरण** : महिलाओं की भागीदारी के बिना कोई भी समाज विकसित नहीं हो सकता। विकसित भारत में शिक्षा, रोजगार और निर्णय-निर्माण में महिलाओं की समान भागीदारी आवश्यक होगी।
- **समावेशी समाज** : अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग और दिव्यांगजन के उत्थान के बिना विकास अधूरा रहेगा।
- **युवा और सामाजिक परिवर्तन** : समाज में व्याप्त कुरीतियों, भेदभाव और अंधविश्वास को दूर करने में युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

3. आर्थिक परिप्रेक्ष्य

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2047 तक इसे प्रथम तीन में लाने का लक्ष्य है। विकसित भारत की आर्थिक परिकल्पना निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है :

1. **औद्योगिक विकास** – 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी पहलें।
2. **कृषि आधुनिकीकरण** – कृषि को तकनीक से जोड़ना, किसानों की आय दोगुनी करना और ग्रामीण विकास को प्राथमिकता देना।
3. **डिजिटल अर्थव्यवस्था** – डिजिटल इंडिया, फिनटेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ई-गवर्नेंस के माध्यम से नई आर्थिक दिशा।

4. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा** – भारत को उत्पादन और निर्यात का वैश्विक केंद्र बनाना।
5. **रोज़गार सृजन** – बढ़ती युवा आबादी को उत्पादक कार्य में लगाने के लिए उद्यमिता और कौशल विकास।

4. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

भारत की संस्कृति उसकी आत्मा है। योग, आयुर्वेद, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, साहित्य और त्यौहार भारत को विश्व में विशिष्ट बनाते हैं। विकसित भारत का अर्थ है कि आधुनिकता और परंपरा का संतुलित समन्वय हो।

- **सांस्कृतिक पहचान** : वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को सुरक्षित रखना।
- **सांस्कृतिक कूटनीति** : भारत की सांस्कृतिक शक्ति का उपयोग अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करने में।
- **नवोन्मेष और परंपरा का संगम** : युवा अपनी रचनात्मकता से संस्कृति को आधुनिक रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

(3) युवाओं की भूमिका : विकसित भारत के निर्माण में योगदान

भारत के युवा केवल भविष्य के नागरिक नहीं हैं, बल्कि वर्तमान के निर्माता भी हैं। विकसित भारत की संकल्पना तभी साकार हो सकती है जब युवा अपनी ऊर्जा, कौशल और रचनात्मकता को राष्ट्रनिर्माण की दिशा में लगाएँ। उनकी भूमिका बहुआयामी है – सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी, पर्यावरणीय, लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक।

1. सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत

- **समानता और सामाजिक न्याय** : युवा समाज में व्याप्त जातिवाद, लिंगभेद और भेदभाव को समाप्त करने में योगदान दे सकते हैं।
- **शिक्षा और जागरूकता** : शिक्षित युवा ग्रामीण और शहरी समाज में साक्षरता एवं जागरूकता फैलाकर सामाजिक कुरीतियों को मिटा सकते हैं।
- **स्वयंसेवा और समाजसेवा** : NGOs, NSS (National Service Scheme) और NYKS (Nehru Yuva Kendra Sangathan) जैसे मंचों के माध्यम से युवा सामाजिक कार्यों में भाग लेते हैं।
- **डिजिटल क्रांति का उपयोग** : सोशल मीडिया का उपयोग कर युवा सामाजिक अभियानों (जैसे स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ) को जन-आंदोलन का रूप दे सकते हैं।

2. आर्थिक प्रगति एवं उद्यमिता

- **रोज़गार सृजन** : पारंपरिक नौकरियों के बजाय उद्यमिता को अपनाकर युवा स्वयं के साथ दूसरों के लिए भी रोज़गार के अवसर उत्पन्न कर सकते हैं।

- **स्टार्टअप संस्कृति** : आज भारत में लाखों स्टार्टअप सक्रिय हैं, जिनमें आईटी, ई-कॉमर्स, एग्रीटेक और हेल्थटेक प्रमुख क्षेत्र हैं।
- **ग्रामीण विकास** : ग्रामीण युवाओं द्वारा कृषि-आधारित उद्योग, डेयरी, मत्स्य पालन और कुटीर उद्योग विकसित किए जा सकते हैं।
- **आर्थिक आत्मनिर्भरता** : "वोकल फॉर लोकल" और "मेक इन इंडिया" अभियानों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी से भारत आत्मनिर्भर बन सकता है।

3. विज्ञान और तकनीकी नवाचार

- **अनुसंधान और आविष्कार** : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) और अन्य विश्वविद्यालयों के युवा शोधकर्ता नई तकनीकों का विकास कर रहे हैं।
- **डिजिटल इंडिया** : युवाओं की भागीदारी से भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था का वैश्विक केंद्र बन सकता है।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स** : भारतीय युवा इन उभरती तकनीकों में नए अवसर खोज सकते हैं।
- **अंतरिक्ष और रक्षा अनुसंधान** : इसरो और DRDO जैसे संस्थानों में युवा वैज्ञानिक भारत को वैश्विक शक्ति बना रहे हैं।

4. पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

- **ग्रीन एनर्जी** : सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और बायो-एनर्जी को बढ़ावा देने में युवाओं की भूमिका अहम है।
- **प्लास्टिक मुक्त अभियान** : कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर चलाए गए अभियानों से युवाओं ने समाज को जागरूक किया है।
- **जलवायु परिवर्तन जागरूकता** : ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण जैसी समस्याओं से निपटने के लिए युवा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति** : युवा स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय होकर संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों की पूर्ति में योगदान कर सकते हैं।

5. लोकतंत्र और सुशासन

- **राजनीतिक भागीदारी** : युवा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेकर नीति-निर्माण में योगदान देते हैं।
- **मतदान** : अधिक से अधिक संख्या में मतदान करके युवा सुशासन को मजबूत करते हैं।
- **भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन** : युवा जागरूकता फैलाकर पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित कर सकते हैं।
- **डिजिटल गवर्नेंस** : युवा डिजिटल माध्यमों से शासन की पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

6. सांस्कृतिक पहचान और वैश्विक प्रतिस्पर्धा

- **भारतीय संस्कृति का संरक्षण** : योग, आयुर्वेद, संगीत, नृत्य और साहित्य के प्रचार-प्रसार में युवा महत्वपूर्ण हैं।

- **सांस्कृतिक नवाचार** : आधुनिक कला, फिल्म, साहित्य और डिजिटल माध्यमों से भारतीय संस्कृति को नए रूप में प्रस्तुत करना।
- **वैश्विक मंच पर भारत की पहचान** : विदेशों में बसे भारतीय युवा भारतीय संस्कृति और मूल्यों के राजदूत की तरह कार्य करते हैं।
- **सॉफ्ट पावर** : युवा खेल, कला, विज्ञान और तकनीक के माध्यम से भारत की वैश्विक छवि को सशक्त बनाते हैं।

(4) सरकार की पहल और नीतियाँ : युवाओं के लिए मार्गदर्शन

भारत सरकार ने विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए अनेक योजनाएँ और नीतियाँ बनाई हैं, जिनमें युवाओं की भागीदारी केंद्र में है। ये पहलें शिक्षा, कौशल, उद्यमिता, डिजिटल परिवर्तन और आत्मनिर्भरता पर आधारित हैं।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)

- शिक्षा को **समग्र, बहुआयामी और लचीला** बनाने का प्रयास।
- कौशल-आधारित शिक्षा, डिजिटल लर्निंग और अनुसंधान को बढ़ावा।
- छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, नवाचार और उद्यमिता की क्षमता विकसित करना।
- मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा पर बल, ताकि ग्रामीण और वंचित वर्ग के युवा भी आगे बढ़ सकें।

2. स्टार्टअप इंडिया

- 2016 में शुरू हुआ यह अभियान युवाओं को उद्यमिता की दिशा में प्रोत्साहित करता है।
- टैक्स में छूट, सरल पंजीकरण और निवेशकों तक पहुँच जैसी सुविधाएँ।
- भारत आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा **स्टार्टअप इकोसिस्टम** है, जिसमें अधिकांश स्टार्टअप्स युवाओं द्वारा स्थापित हैं।

3. डिजिटल इंडिया

- डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट कनेक्टिविटी और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा।
- ग्रामीण और शहरी युवाओं को समान अवसर प्रदान करना।
- डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन जैसी सेवाएँ।
- इससे युवाओं के लिए नई नौकरियों और उद्यमिता के अवसर खुले हैं।

4. स्किल इंडिया मिशन

- 2015 में शुरू किया गया "स्किल इंडिया मिशन" युवाओं को रोजगार-उन्मुख कौशल प्रदान करने हेतु।

- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के अंतर्गत लाखों युवाओं को प्रशिक्षण।
- AI, डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्योरिटी, नवीकरणीय ऊर्जा जैसे उभरते क्षेत्रों में कौशल विकास।

5. आत्मनिर्भर भारत अभियान

- 2020 में शुरू इस अभियान का उद्देश्य भारत को **स्वदेशी उत्पादन और आत्मनिर्भरता** की ओर ले जाना है।
- MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग) को बढ़ावा, ताकि युवा स्थानीय स्तर पर उद्योग स्थापित कर सकें।
- "वोकल फॉर लोकल" अभियान के माध्यम से युवाओं को स्वदेशी उत्पादों के प्रति जागरूक करना।

6. अमृतकाल @2047 की परिकल्पना

- वर्ष 2047 में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होंगे। सरकार ने इसे "अमृतकाल" का नाम दिया है।
- इसका लक्ष्य भारत को **विकसित राष्ट्र** बनाना है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार, अमृतकाल के दौरान युवाओं का योगदान – नवाचार, पर्यावरण संरक्षण, तकनीकी प्रगति और राष्ट्र की एकता – सबसे महत्त्वपूर्ण है।

7. अन्य योजनाएँ और कार्यक्रम

- **मेक इन इंडिया** : युवाओं को उत्पादन क्षेत्र में अवसर प्रदान करना।
- **स्टैंड अप इंडिया** : युवाओं, महिलाओं और वंचित वर्ग को उद्यमिता हेतु प्रोत्साहित करना।
- **नेशनल यूथ पॉलिसी** : युवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल और सहभागिता पर केंद्रित नीति।
- **स्टार्टअप हब और टिंकरिंग लैब्स** : युवाओं को प्रयोग और नवाचार के लिए मंच उपलब्ध कराना।

(5) चुनौतियाँ और समस्याएँ : युवा शक्ति के समक्ष अवरोध

विकसित भारत की संकल्पना में युवाओं की केंद्रीय भूमिका है, किंतु उनके सामने अनेक चुनौतियाँ और समस्याएँ भी विद्यमान हैं। यदि इन बाधाओं का समाधान नहीं किया गया, तो जनसांख्यिकीय लाभ (Demographic Dividend) एक **जनसांख्यिकीय बोझ (Demographic Burden)** में बदल सकता है।

1. बेरोज़गारी और अपूर्ण रोजगार

- युवाओं के सामने सबसे बड़ी समस्या रोजगार की है।

- उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बड़ी संख्या में युवा बेरोज़गार रहते हैं।
- **ILO (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन)** की रिपोर्ट (2023) के अनुसार, भारत में युवा बेरोज़गारी दर 15–20% तक है, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
- अपूर्ण रोजगार (Underemployment) की समस्या भी गंभीर है, जहाँ युवाओं की योग्यता के अनुसार अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते।

2. ग्रामीण–शहरी असमानता

- ग्रामीण क्षेत्रों के युवा शिक्षा, कौशल और अवसरों से वंचित रहते हैं।
- शहरों में पलायन करने वाले युवाओं को असुरक्षित रोजगार, आवास और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी झेलनी पड़ती है।
- डिजिटल डिवाइड (Digital Divide) अब भी मौजूद है, जिससे ग्रामीण युवा पिछड़ जाते हैं।

3. नशा और अपराध

- नशाखोरी, धूम्रपान, शराब और ड्रग्स का सेवन युवाओं को कमजोर बनाता है।
- कुछ क्षेत्रों में यह समस्या सामाजिक संकट का रूप ले चुकी है (जैसे पंजाब में ड्रग्स की समस्या)।
- नशे से जुड़ी प्रवृत्तियाँ अपराध, हिंसा और असामाजिक गतिविधियों को जन्म देती हैं।

4. मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ

- बढ़ती प्रतिस्पर्धा, बेरोज़गारी, पारिवारिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाएँ युवाओं को तनावग्रस्त करती हैं।
- अवसाद (Depression), चिंता (Anxiety), और आत्महत्या जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।
- WHO की एक रिपोर्ट (2022) के अनुसार, भारत में आत्महत्या से मृत्यु दर विश्व में सबसे अधिक युवाओं में पाई जाती है।

5. शिक्षा की गुणवत्ता में कमी

- शिक्षा के अवसर बढ़े हैं, किंतु गुणवत्ता अब भी असमान है।
- सरकारी विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में संसाधनों की कमी।
- निजी शिक्षा महँगी होने के कारण गरीब और ग्रामीण युवा पिछड़ जाते हैं।

6. सामाजिक असमानताएँ और लैंगिक भेदभाव

- जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता और सामाजिक पूर्वाग्रह युवाओं की क्षमता को सीमित करते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लड़कियों की शिक्षा और रोजगार में भागीदारी सीमित है।

- सुरक्षित माहौल की कमी से महिलाएँ अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार योगदान नहीं दे पातीं।

7. वैश्विक प्रतिस्पर्धा का दबाव

- ग्लोबलाइजेशन ने अवसर बढ़ाए हैं, किंतु साथ ही प्रतिस्पर्धा भी तीव्र हो गई है।
- युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार अपने कौशल को विकसित करना पड़ता है।
- यदि सही दिशा न मिले तो यह दबाव हताशा और पलायन को बढ़ाता है।

8. पर्यावरणीय और सामाजिक संकट

- जलवायु परिवर्तन, बेरोज़गारी और तकनीकी असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियों से युवा सीधे प्रभावित होते हैं।
- उन्हें न केवल इन संकटों का समाधान करना है, बल्कि इनके नकारात्मक प्रभाव भी झेलने पड़ते हैं

(6) समाधान एवं सुझाव

1. **रोज़गार और कौशल विकास** – युवाओं के लिए रोजगारोन्मुखी योजनाओं का विस्तार, स्टार्टअप और उद्यमिता को प्रोत्साहन, तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्रीन एनर्जी और साइबर सिक्योरिटी जैसे उभरते क्षेत्रों में प्रशिक्षण।
2. **शिक्षा प्रणाली का सुदृढ़ीकरण** – प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक समान अवसर, डिजिटल शिक्षा का विस्तार, तथा विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं में अनुसंधान एवं नवाचार हेतु पर्याप्त संसाधन।
3. **मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य** – परामर्श सेवाओं और हेल्पलाइन की उपलब्धता, खेल व योग को बढ़ावा, तथा विद्यालय–महाविद्यालय स्तर पर नशामुक्ति अभियान।
4. **सामाजिक समानता और सशक्तिकरण** – महिलाओं एवं वंचित वर्गों के लिए सुरक्षित वातावरण, विशेष अवसर और छात्रवृत्तियाँ, तथा लैंगिक समानता आधारित नीतियों का सख़्ती से पालन।
5. **पर्यावरणीय जिम्मेदारी** – स्वच्छ ऊर्जा, वृक्षारोपण और जल संरक्षण अभियानों में युवाओं की भागीदारी, शैक्षणिक संस्थानों में "ग्रीन क्लब" की स्थापना, तथा सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को जनआंदोलन का रूप।
6. **लोकतांत्रिक सहभागिता** – युवाओं को पंचायत से लेकर संसद तक नीति-निर्माण में अवसर, राजनीति में युवाओं के लिए प्रोत्साहन, तथा ई-गवर्नेंस और डिजिटल लोकतंत्र में सक्रिय भूमिका।

(7) निष्कर्ष

भारत आज एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है। "विकसित भारत 2047" केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों का स्वप्न है। इस स्वप्न को साकार करने में युवा ही सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनकी ऊर्जा, नवाचार, रचनात्मकता और देशभक्ति भारत को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती है। हालाँकि, बेरोज़गारी, मानसिक स्वास्थ्य, असमानता और नशे जैसी चुनौतियाँ युवाओं के सामने खड़ी हैं। यदि इनका समय रहते समाधान किया जाए तो भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का सही उपयोग कर सकता है। अंततः, विकसित भारत की संकल्पना तभी पूर्ण होगी जब युवा—शिक्षा, उद्यमिता, तकनीकी नवाचार, पर्यावरण संरक्षण, लोकतंत्र और संस्कृति के हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाएँ। **युवा केवल भारत का भविष्य नहीं हैं, बल्कि वर्तमान के निर्माता भी हैं।**

(8) संदर्भ सूची

[1] भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।* नई दिल्ली : मानव संसाधन विकास मंत्रालय।

[2] भारत सरकार। (2016)। *स्टार्टअप इंडिया योजना।* नई दिल्ली : उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग।

[3] भारत सरकार। (2015)। *स्किल इंडिया मिशन।* नई दिल्ली : कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय।

[4] Planning Commission of India. (2013). *Twelfth Five Year Plan (2012–2017).* New Delhi: Government of India.

[5] NITI Aayog. (2021). *Strategy for New India @75.* New Delhi.

[6] United Nations Development Programme (UNDP). (2023). *Human Development Report.* New York.

[7] International Labour Organization (ILO). (2023). *Global Employment Trends for Youth.* Geneva.

[8] World Health Organization (WHO). (2022). *Mental Health and Suicide Prevention among Youth.* Geneva.

[9] Kumar, S. (2019). *Youth and Nation Building: Role of Indian Youth.* New Delhi: Sage Publications.

[10] Sharma, R. (2021). *Indian Youth and Social Change.* Jaipur: Rawat Publications.